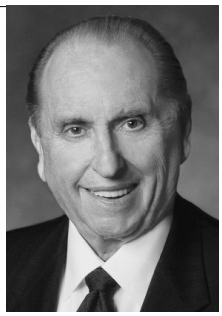

**अध्यक्ष थॉमस एस.
मॉनसन द्वारा**

आज संसार को पथ प्रदर्शकों की जरूरत है

बहुतों के लिए, 1847 की पथ प्रदर्शक पैदलपथ यात्रा फार वैस्ट, किर्टलैंड, नावू या न्यू यॉर्क में आरंभ न होकर असल में सुदूर इंगलैंड, स्कॉटलैंड, स्कैडिनेविया, या जर्मनी में आरंभ हुई थी । नन्हें बच्चे उस प्रभावकारी विश्वास को पूरी तरह समझ नहीं सकें थे जिसने उनके माता-पिता को परिवार, मित्रों, सुख-साधनों और सुरक्षा को पीछे छोड़ने के लिए प्रेरित किया था ।

एक छोटे बच्चे ने पूछा होगा, ''मम्मी, हम घर क्यों छोड़ रहे हैं ? हम कहां जा रहे हैं ?''

''साथ चलो, अनमोल बच्चे; हम हमारे परमेश्वर के नगर, सिय्योन जा रहे हैं ।''

घर की सुरक्षा और सिय्योन की प्रतिज्ञा के बीच विशालकाय अटलांटिक महासागर का प्रचंड और अस्थिर पानी था । कौन उस भय का वर्णन कर सकता है जिसने मानव हृदय को उन खतरनाक समुद्र यात्रा के दौरान जकड़ रखा था ? आत्मा की शांत फुसफुसाहट द्वारा प्रोत्साहन पाकर, सरल परन्तु स्थिर विश्वास के सहारे, उन पथ प्रदर्शक संतों ने परमेश्वर में भरोसा रखाकर और अपनी यात्रा पर रवाना हुए थे ।

वे अंततः नावू पहुंचे वहां पहुंचकर कठिनाइयों का सामना करते हुए उनकी यात्रा फिर से आरंभ हुई थी । नावू से सॉल्ट लेक सिटी तक सारे मार्ग में संतों की कब्रों के पत्थर और कब्रें थी । ऐसा बड़ा मूल्य कुछ पथ प्रदर्शकों ने चुकाया था । उनके शरीर शांति से दफानाया गया, लेकिन उनके नाम हमेशा जीवित हैं ।

थके बैल मंद गति से चल रहे थे, गाड़ियों के पहिये चरमरा रहे थे, बहादुर पुरूष कड़ा परिश्रम कर रहे थे, युद्ध के ढोल बज रहे थे, और भेड़िये चिल्ला रहे थे । लेकिन विश्वास से प्रेरित और प्रचंड वेग से चलते पथ प्रदर्शक आगे बढ़ते चले जा रहे थे । वे अक्सर गाते थे :

आओ, आओ, संतों, न कठिनाई से, न ही मेहनत से डरो ;
लेकिन आनंद से अपना मार्ग बनाओ ।
यद्यपि यह यात्रा आपको कठिन प्रतीत होती है,
महिमा आप के दिन आपकी होगी । ...
सब अच्छा है ! सब अच्छा है ! [1]

इन पथ प्रदर्शकों को प्रभु के वचन याद थेः ''मेरे लोगों की हर बातों में परिक्षा होनी चाहिए, ताकि वे उस महिमा को पाने के लिये तैयार हों जो कि मैंने उनके लिए रखीं हैं,यहां तक सिय्योन की महिमा भी ।'' [2]

समय बीतने के साथ साथ हमारी यादें उनके प्रति और हमारी प्रशंसा धूमिल हो जाती हैं जो उस पीड़ा के मार्ग से गुजरते हुए अपने पीछे आसुं-भरी गुमनाम कब्रों के निशान छोड़ते चले गये थे । लेकिन आज की चुनौतियों के बारे में क्या ? क्या यात्रा में कोई पथरीले मार्ग नहीं हैं, चढ़ने के लिए उबड़-खाबड़ पहाड़ नहीं हैं, पार करने के लिए गहरी-खाइयां नहीं हैं, निशान छोड़ने के लिए मार्ग नहीं हैं, पार करने लिए नदियां नहीं है ? या क्या उसी पथ प्रदर्शक आत्मा के मार्गदर्शन की जरूरत है जो उन खतरों से दूर रखे जो हमें निगलने के लिए भयभीत करते हैं और सिय्योन की सुरक्षा तक ले जाने में हमारा मार्गदर्शन करे ?

यहां तक द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद दशकों में, नैतिकता के स्तर कई बार गिर चुके है । अपराध बढ़ गये हैं; सभ्यता नीचे गिर रही है । बहुत से विनाश के विशाल रोलर कोस्टर में बैठे, रोमांच के क्षण की तालाश कर रहे हैं जबकि अनंतकाल के आनंद का त्याग कर रहे हैं । इस प्रकार से हम शांति को खो बैठते हैं ।

हम भूल जाते हैं कैसे यूनानियों और रोमियों ने भव्यता से निदर्यी

संसार में समाना किया था और कैसे उस विजय का अंत हुआ था—कैसे आलसीपन और कमजोरी ने उनका विनाश किया था । अंत में, वे स्वतंत्रता चाहते थे, वे सुरक्षा और आरामदय जीवन चाहते थे; और उन्होंने सबकुछ खो दिया था—सुख और सुरक्षा और स्वतंत्रता ।

शैतान के लालच के सामने झुके नहीं; बल्कि, सच्चाई के लिये डटे रहे । आनंद के लिए कभी-न-समाप्त होने वाली तलाश व्यक्ति की असंतुष्ट इच्छाएं उत्तेजना और पाप के रोमांचों के बीच पूरी नहीं होगी । पाप कभी भी सदगुण की ओर नहीं ले जाता । नफरत कभी प्रेम को उत्साहित नहीं करती । कायरता कभी साहस नहीं देती । संदेह कभी विश्वास को प्रेरित नहीं करता ।

कुछ लोगों को मूर्ख लोगों के मजाक उड़ाने वाले और घृणित आलोचनाओं का सामना करने में कठिनाई होती है जो यौन शुद्धता, ईमानदारी, और परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होने का उपहास करते हैं । लेकिन संसार ने हमेशा से सिद्धांतों के प्रति निष्ठा का अनादर किया है । जब नूह को जहाज बनाने का निर्देश दिया गया था, मूर्ख लोग बादल रहित आकाश की ओर देखते और फिर मजाक उड़ाते थे—जबतक वर्षा न हुई थी ।

क्या हमें ऐसे बहुमूल्य पाठों को बार बार सीखते रहना चाहिए ? समय बदलता है, लेकिन सच्चाई कायम रहती है । जब हम अतीत के अनुभवों से सीख लेने में असफल रहते हैं, सब व्यथा, कष्ट और शोक के साथ उनको दोहराने की हमारी नियति होती है । क्या हमारे पास उसकी आज्ञा का पालन करने की समझ नहीं है जो आदि और अंत सबकुछ जानता है—हमारा प्रभु, जिसने उद्धार की योजना बनाई थी बजाये उस सर्प की , जिसने इसकी सुंदरता को नष्ट किया था ?

शब्दकोष पथ प्रदर्शक को ''वह जो आगे बढ़कर पीछे आने वालों के लिए मार्ग तैयार करता या खोलता है'' के रूप को परिभाषित करती है । [3] क्या हम किसी प्रकार लक्ष्य के साहस और दृढ़ता को संचित कर सकते हैं जो पहले की पीढ़ी के पथ प्रदर्शकों को चरित्रार्थ कर सके ? क्या आप और मैं, सचमुच, पथ प्रदर्शक हो सकता हैं ?

मैं जानता हूं हम हो सकता हैं । ओह, आज संसार को पथ प्रदर्शकों की कितनी जरूरत है !

विवरण

1. "Come, Come, Ye Saints," स्तुतिगीत, न. 30 ।
2. सिद्धांत और अनुबंध 136:31 ।
3. *Oxford English Dictionary, 2nd ed. (1989), "pioneer* ।"

इस संदेश से शिक्षा

धर्मशास्त्र व्याख्या करते हैं कि घर के शिक्षकों को ''सभी को मसीह के पास आने की चेतावनी, उपदेश, सलाह, और शिक्षा, और निमंत्रण देना है'' (सि और अनु 20:59) । जिनसे आप मिलते हैं उन्हें अध्यक्ष मॉनसन के संदेश में शामिल चेतावनियों और निमंत्रणों को बताने पर विचार करें । आप उनसे धर्मी उदाहरणों को पहचानने और अनुसरण करने, धोखों से बचने, और दूसरों की गलतियों से सीखने पर चर्चा कर सकते हैं । जिन्हें आप सीखाते हैं उनसे पूछें आज वे पथ प्रदर्शक कैसे हो सकते हैं ।

युवा

विश्वास द्वारा प्रेरित

मैगी एर्ल द्वारा

मैं कभी भी विंटर क्वाटरस, नब्रासका, सराअ, की भूमि पर चलना नहीं भूल सकती, जहां पथ प्रदर्शक वर्षों पहले रहे थे । भूमि पवित्र महसूस हुई थी, बिलकुल वैसे जैसे मानो मैं खुले मंदिर में हूं ।

मेरी आंखें आंसू से भर गई, मेरी दृष्टि धुंधली हो गई । मैंने एक मूर्ति देखी लेकिन आकृतियों को पहचान नहीं पाई । जब मैंने अपने आंसूओं को पोछा, मैंने एक पुरूष और स्त्री को देखा जिनके चेहरे दर्द से भरे थे । जब मैंने निकट से देखा, मैंने उनके पैरों के निकट कब्र में एक नवजात शिशु की आकृति को लेटे पाया ।

इस दृश्य से मुझ में बहुत सी भावनाएं भर गईः दुख, क्रोध, कृतज्ञता, और आनंद । मैं उस दर्द को दूर करना चाहती थी जो उन संतों ने महसूस किया था, लेकिन उसी क्षण मैं आभारी थी जो उन्होंने सुसमाचार के लिए बलिदान किया था ।

विंटर क्वाटरस में मेरे अनुभव ने मुझे महसूस करने में मदद की थी कि स्वर्गीय पिता अपने बच्चों को सुसमाचार देता है और उनकी इच्छा के अनुसार इसका पालन करने की स्वतंत्रता देता है । बच्चे के माता पिता सरल मार्ग अपना सकते थे । भविष्यवक्ता का पालन करना और सुसमाचार को जीना इन पथ प्रदर्शकों की जरुरत थी तब भी आगे बढ़ते जाना था जबकि इसका अर्थ उन्हें अपने बच्चे को दफनाना था । लेकिन उन्होंने अपने जीवन में सुसमाचार को अपनाया और अपनी चुनौतियों का सामना किया था । मैंने सीखा था कि सुसमाचार के प्रति संतों की निष्ठा और आगे बढ़ने की उनकी दृढ़ता विश्वास और आशा द्वारा प्रेरित थी—उज्जवल भविष्य की आशा और विश्वास कि प्रभु उन्हें जानता है और उनके दर्द को कम करेगा ।

लेखिका नार्थ कैरोलाइना, सराअ, में रहती है ।

बच्चे

पथ प्रदर्शक बनें

अध्यक्ष मॉनसन कहते हैं कि पथ प्रदर्शक वह होता है जो दूसरों को अनुसरण करने के लिए मार्ग दिखाता है । जो सही है उसका सर्मथन करने के लिए और अपने समाज और अपने परिवार में दूसरों के लिए पथ प्रदर्शक होने के लिए आप क्या कर सकते हैं ? अपने उत्तरों को लिखें और अपने परिवार के साथ बांटें ।

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/13 । अनुवाद अनुमतिः 6/13 । *First Presidency Message, July 2013* का अनुवाद । Hindi । 10667 294

सुसमाचार सीखाना और सीखना

इस सामाग्री को पढ़ें, और जैसा उचित हो, बहनें जिन से आप भेंट करती हैं के साथ इस पर चर्चा करें । अपनी बहनों को मजबूत और सहायता संस्था को अपने जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाने में मदद के लिए प्रश्नों का प्रयोग करें । अधिक जानकारी के लिए, ***reliefsociety.lds.org*** *को देखें।*

विश्वास, परिवार, सहायता

यीशु मसीह एक निपुर्ण शिक्षक था । उसने हमारे लिए एक उदाहरण रखा जब उसने ''स्त्रियों को भीड़ में और व्यक्तिगतरूप से, गलियों में और समुद्र के किनारे, कुंए पर और उनके घरों में सीखाया था । उसने उनके प्रति प्रेम भरी दया दिखाई और उन्हें और उनके परिवार के सदस्यों को चंगा किया था ।'' [1]

उसने मारथा और मरियम को सीखाया और ''उन्हें अपने शिष्य बनने और उद्धार में भाग लेने का निमंत्रण दिया था ''वह उत्तम भाग'' [लूका 10:42] जोकि उनसे कभी छीना नहीं जाएगा ।'' [2]

हमारे अंतिम-दिनों के धर्मशास्त्रों में, प्रभु ने हमें ''एक दूसरे को राज्य के सिद्धांत सीखाने की''(सि और अनु 88:77) आज्ञा दी है । सिद्धांत सीखाने और सीखने के विषय में, चेरियल ए. एस्पलिन, प्राथमिक जनरल अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार ने, कहा था, ''सुसमाचार के सिद्धांतों को पूरी तरह समझकर सीखना जीवनभर की प्रक्रिया है और 'नियम पर नियम, आज्ञा पर आज्ञा, थोड़ा यहां और थोड़ा वहां' (2 नफी 28:30) से मिलता है ।'' [3]

जैसे हम सीखते, अध्ययन करते, और प्रार्थना करते हैं, हम पवित्र आत्मा की शक्ति से सीखेंगे, जो हमारे संदेशों को ''मानव संतान के हृदयों तक पहुंचाती है'' (2 नफी 33:1) ।

धर्मशास्त्रों से

अलमा 17:2–3; 31:5; सिद्धांत और अनुबंध 42:12–13; 84:85

हमारे इतिहास से

हमारे भूतकाल के भविष्यवक्ताओं ने हमें स्त्रियों के रूप में याद दिलाया है कि घर और गिरजे में शिक्षक के रूप में हमारी एक महत्वपूर्ण भूमिका है । सितंबर 1979 में, अध्यक्ष स्पेनसर डब्ल्यू. किंबल (1895–1985) ने हमें ''बहन धर्मशास्त्र-महाज्ञानी ' बनने के लिए कहा था । उन्होंने कहा थाः ''धर्मशास्त्रों का महाज्ञानी होना—दूसरों को नीचा दिखाने के लिए नहीं, लेकिन उन्हें ऊपर उठाने के लिए ! आखिकार, सुसमाचार की सच्चाइयों को ''संजोकर'' रखने की जरूरत स्त्रियों और मांओं से अधिक किसे है (अपने जरूरत के क्षणों में वे जिसे पूकार सकती हैं) जो इतना अधिक पालन पोषण करती और सीखाती हैं ?'' [4]

हम सभी शिक्षक और शिष्य हैं । जब हम धर्मशास्त्रों में से और हमारे जीवित भविष्यवक्ताओं के शब्दों को सीखाते हैं, हम दूसरों की मसीह के निकट आने में मदद करते हैं । जब हम अर्थपूर्ण प्रश्न पूछकर और फिर सुनकर सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं, हम अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार अपने उत्तरों को पा सकते हैं ।

विवरण

1. देखें *Daughters in My Kingdom: The History and Work of Relief Society* (2011), 3 ।
2. देखें *Daughters in My Kingdom*, 4 ।
3. *Cheryl A. Esplin, "Teaching Our Children to Understand," लियाहोना और एन्साइन,* मई 2012, 12 ।
4. Spencer W. Kimball, in *Daughters in My Kingdom,* 50 ।

मैं क्या कर सकती हूं ?

1. मैं कैसे बेहतर शिक्षक बनने की तैयारी कर रही हूं ?

2. जिन बहनों की मैं देख-भाल करती हूं क्या मैं उनके साथ अपनी गवाही बांटती हूं ?

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/13 । अनुवाद अनुमतिः 6/13 । *Visiting Teaching Message, July 2013* का अनुवाद । Hindi । 10367 294